IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, September 2025
Impact Factor: 7.67

शैक्षणिक ग्रंथालयों में ई–संसाधनों का प्रबंधनः चुनौतियाँ, संभावनाएँ और ग्रंथालय कर्मियों की भूमिका

अजय कुमार यादव
एसोसियेट प्रोफेसर लाइब्रेरी
सकलडीहा पी. जी. कॉलेज, सकलडीहा, चन्दौली

सारांश (Abstract)

यह शोध डिजिटल परिवर्तन की दिशा में नीतिगत समर्थन, आधारभूत संरचना, और निरंतर प्रशिक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करता है। निष्कर्षतः, यह अध्ययन सुझाव देता है कि ग्रंथपालों को केवल पुस्तकाध्यक्ष नहीं, बल्कि 'डिजिटल ज्ञान प्रबंधक' के रूप में स्थापित किया जाना चाहिए, ताकि वे डिजिटल युग की अपेक्षाओं पर खरे उतर सकें।

परिचय (Introduction)

वर्तमान युग सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का युग है, जिसने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। ज्ञान के संचयन, संरक्षण और प्रसार की परंपरागत प्रणाली में भी एक क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिला है। शैक्षणिक ग्रंथालय, जो कि उच्च शिक्षा का एक अभिन्न अंग हैं, इस परिवर्तन से अछूते नहीं रहे हैं। पहले जहाँ ये ग्रंथालय केवल मुद्रित पुस्तकों, पत्रिकाओं और संदर्भ सामग्री तक सीमित थे, वहीं आज वे डिजिटल सूचना केंद्र के रूप में विकसित हो चुके हैं, जहाँ पाठकों को इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों (E-Resources) के माध्यम से सूचनाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं।

ई-संसाधनों में ई-पुस्तकें, ई-जर्नल्स, ऑनलाइन डेटाबेस, शोध प्रबंध, संस्थागत रिपॉजिटरी, ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेस (OER), मल्टीमीडिया कंटेंट और शैक्षणिक वेबसाइटें शामिल हैं, जो उपयोगकर्ताओं को घर बैठे त्वरित और सटीक जानकारी उपलब्ध कराती हैं। इन संसाधनों की उपयोगिता और प्रासंगिकता ने शैक्षणिक ग्रंथालयों की पारंपरिक भूमिका को एक नई दिशा दी है। अब ग्रंथालय केवल संग्रहालय नहीं रहे, बल्कि वे ज्ञान की सक्रिय प्रयोगशाला के रूप में सामने आए हैं।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-28905

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, September 2025
Impact Factor: 7.67

इस बदलाव ने ग्रंथालय कर्मियों की भूमिका को भी पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया है। उन्हें अब केवल पुस्तक प्रबंधन तक सीमित नहीं रहना, बल्कि डिजिटल संसाधनों की पहचान, उनका चयन, अनुबंध, उपयोगकर्ता प्रशिक्षण, तकनीकी सहायता, और डिजिटल नैतिकता जैसे नए क्षेत्रों में दक्षता प्राप्त करनी पड़ रही है। इस नई भूमिका ने उनके कार्यक्षेत्र को व्यापक और तकनीकी रूप से अधिक जटिल बना दिया है।

हालाँकि ई-संसाधनों के प्रबंधन में अनेक संभावनाएँ हैं, जैसे कि उपयोगकर्ताओं को बहुआयामी सामग्री तक पहुँच, शिक्षण और शोध में गुणवत्ता में वृद्धि, और लागत की बचत; परंतु साथ ही अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। तकनीकी अवसंरचना की कमी, सीमित बजट, डिजिटल साक्षरता का अभाव, कॉपीराइट संबंधित जटिलताएँ, और स्टाफ प्रशिक्षण की आवश्यकता जैसे पहलू इस दिशा में गंभीरता से विचार करने योग्य हैं।

ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि शैक्षणिक ग्रंथालयों में ई-संसाधनों के प्रबंधन को एक सुव्यवस्थित और रणनीतिक दृष्टिकोण से देखा जाए। इस शोध का उद्देश्य इन्हीं विषयों का विश्लेषण करना है— अर्थात् ई-संसाधनों की वर्तमान स्थिति, उनसे जुड़ी चुनौतियाँ और संभावनाएँ, तथा ग्रंथालय कर्मियों की भूमिका में हो रहे परिवर्तन को समझना और आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करना। यह अध्ययन विशेष रूप से भारतीय शैक्षणिक संस्थानों के परिप्रेक्ष्य में किया जा रहा है, जिससे राष्ट्रीय स्तर पर डिजिटल परिवर्तन की प्रक्रिया में ग्रंथालयों की भागीदारी को समझा जा सके

ई-संसाधनों का स्वरूप और प्रकार (Nature and type of e-resources)

आधुनिक सूचना युग में सूचना के आदान-प्रदान का तरीका व्यापक रूप से बदल गया है। शैक्षणिक ग्रंथालयों में पारंपरिक मुद्रित सामग्री के साथ-साथ अब इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों (ई-संसाधनों) का अत्यधिक महत्व बढ़ गया है। ई-संसाधनों का तात्पर्य उन सूचनाओं से है जो डिजिटल स्वरूप में उपलब्ध होती हैं और जिन्हें इंटरनेट या किसी नेटवर्क के माध्यम से एक्सेस किया जा सकता है। इन संसाधनों की प्रमुख विशेषताएँ हैं–तेजी से पहुँच, अद्यतन सामग्री, बहु-उपयोगकर्ता पहुँच, और संग्रहण की सुविधा। ई-संसाधनों के प्रकार निम्नलिखित हैं:

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, September 2025
Impact Factor: 7.67

1. **ई-पुस्तकें (E-books):** ये वे पुस्तकें होती हैं जो डिजिटल फॉर्मेट में उपलब्ध होती हैं और कंप्यूटर, टैबलेट या ई-रीडर के माध्यम से पढ़ी जा सकती हैं। कई प्रकाशक अब ई-पुस्तकों के रूप में शिक्षण सामग्री प्रदान कर रहे हैं।
2. **ई-पत्रिकाएँ (E-journals):** ये विद्वत् लेखों से युक्त वैज्ञानिक, तकनीकी, या सामाजिक विषयों पर आधारित जर्नल्स होते हैं जो ऑनलाइन उपलब्ध होते हैं। इनकी पहुँच समयबद्ध और अद्यतन अनुसंधान को तेजी से प्राप्त करने में सहायक होती है।
3. **ऑनलाइन डेटाबेस (Online Databases):** यह संरचित सूचना का संग्रह होता है जिसमें जर्नल लेख, रिपोर्ट, शोधपत्र, आँकड़े आदि शामिल होते हैं। ये डेटाबेस जैसे JSTOR, EBSCO, ProQuest आदि ग्रंथालयों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं।
4. **संसाधन-संहतियाँ (Aggregated Resources):** ये संसाधन एकाधिक प्रकाशकों से सामग्री को एक ही मंच पर लाकर उपयोगकर्ताओं को सुविधा प्रदान करते हैं।
5. **ऑडियो-विजुअल सामग्री (Audio-visual Materials):** इसमें वीडियो लेक्चर, वेबिनार, पॉडकास्ट, शैक्षणिक चलचित्र आदि शामिल होते हैं। यह विशेष रूप से व्यावहारिक शिक्षा के लिए उपयोगी है।
6. **ओपन एक्सेस संसाधन (Open Access Resources):** ये संसाधन निःशुल्क ऑनलाइन उपलब्ध होते हैं और इनका उपयोग किसी भी पंजीकरण या भुगतान के बिना किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप DOAJ, Shodhganga, NDL, आदि।
7. **वेब आधारित शिक्षण सामग्री (Web-based Learning Resources):** इसमें MOOCs, e-PG Pathshala, SWAYAM जैसी पहलें शामिल हैं, जो शिक्षार्थियों को उच्च गुणवत्ता की डिजिटल शिक्षा सामग्री प्रदान करती हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, September 2025
Impact Factor: 7.67

इन ई-संसाधनों ने न केवल ज्ञान के भंडार को समृद्ध किया है बल्कि शिक्षण, अनुसंधान और पाठ्येतर गतिविधियों के लिए एक सशक्त मंच प्रदान किया है। ग्रंथालयों में इन संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन और उपयोग, सूचना साक्षरता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रबंधन की चुनौतियाँ (Challenges in Management of E-Resources)

शैक्षणिक ग्रंथालयों में ई-संसाधनों का प्रबंधन करते समय अनेक प्रकार की चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं, जो तकनीकी, आर्थिक, संगठनात्मक तथा उपयोगकर्ता संबंधी पक्षों से जुड़ी होती हैं। ये चुनौतियाँ न केवल संसाधनों की उपलब्धता और पहुँच को प्रभावित करती हैं, बल्कि ग्रंथालयों की प्रभावशीलता और उपयोगकर्ता संतुष्टि को भी प्रभावित करती हैं।

एक प्रमुख चुनौती ई-संसाधनों की सतत पहुँच (Perpetual Access) को सुनिश्चित करना है। अधिकांश ई-रिसोर्सेज़ सब्सक्रिप्शन आधारित होते हैं, जिससे लाइसेंस समाप्त होते ही उपयोगकर्ताओं की पहुँच रुक जाती है। इसके अतिरिक्त, लाइसेंस शर्तों की जटिलता और कॉपीराइट नियमों की स्पष्टता का अभाव भी प्रबंधन में अवरोध उत्पन्न करता है।

दूसरी ओर, तकनीकी समस्याएँ जैसे कि नेटवर्क कनेक्टिविटी, सर्वर डाउन होना, विभिन्न प्लेटफॉर्मों के साथ संगतता की समस्या आदि भी ई-संसाधनों की उपलब्धता को प्रभावित करती हैं। इसके अलावा, ग्रंथालय कर्मियों में नवीनतम तकनीकों और डिजिटल टूल्स के प्रशिक्षण की कमी भी एक गंभीर चुनौती है, जिससे वे ई-संसाधनों का समुचित चयन, वर्गीकरण, अनुक्रमण और प्रस्तुतीकरण नहीं कर पाते।

आर्थिक सीमाएँ भी एक बड़ी चुनौती हैं। अच्छे ई-रिसोर्सेज़ की लागत अधिक होती है और सीमित बजट के कारण शैक्षणिक संस्थान अनेक बार वांछित संसाधनों को नहीं खरीद पाते। साथ ही, विदेशी मुद्राओं में भुगतान और वार्षिक शुल्कों में बढ़ोतरी भी संस्थानों के लिए वित्तीय दबाव उत्पन्न करती है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, September 2025
Impact Factor: 7.67

उपयोगकर्ताओं की डिजिटल साक्षरता का अभाव भी एक प्रमुख चुनौती है। बहुत से छात्र एवं शिक्षक ई-संसाधनों का उपयोग करने में असहज महसूस करते हैं या उन्हें इन संसाधनों तक पहुँचने के लिए आवश्यक कौशल नहीं होता। इससे ग्रंथालयों में ई-संसाधनों का उपयोग सीमित रह जाता है।

अंततः, डेटा गोपनीयता, साइबर सुरक्षा, और सिस्टम के रखरखाव से संबंधित चुनौतियाँ भी दिन-प्रतिदिन बढ़ रही हैं। ई-संसाधनों की सुरक्षा, बैकअप, और अनधिकृत पहुँच से बचाव के लिए सतर्कता और तकनीकी दक्षता आवश्यक है।

इन समस्त चुनौतियों के समाधान हेतु संस्थागत नीति निर्माण, प्रशिक्षण कार्यक्रम, तकनीकी अवसंरचना का विकास और अंतर-ग्रंथालय सहयोग की नीतियाँ अत्यंत आवश्यक हैं। ग्रंथपालों और ग्रंथालय कर्मियों को इन चुनौतियों से निपटने हेतु निरंतर अपडेटेड और प्रशिक्षित रहना होगा ताकि वे उपयोगकर्ताओं को सर्वोत्तम सेवाएँ प्रदान कर सकें।

संभावनाएँ और अवसर (Possibilities and Opportunities)

डिजिटल युग में शैक्षणिक ग्रंथालयों में ई-संसाधनों के आगमन ने न केवल सूचना की उपलब्धता को व्यापक बनाया है, बल्कि ग्रंथालयों के कार्यप्रणाली में भी क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। ई-संसाधनों के प्रबंधन में जहाँ एक ओर कुछ चुनौतियाँ हैं, वहीं दूसरी ओर इससे अनेक संभावनाएँ और अवसर भी उत्पन्न हुए हैं, जो ग्रंथालय सेवाओं को अधिक सशक्त, दक्ष और उपयोगकर्ता-केंद्रित बनाते हैं।

सबसे प्रमुख संभावना यह है कि ई-संसाधनों के माध्यम से जानकारी तक त्वरित, सहज और व्यापक पहुँच संभव हो सकी है। पहले जहाँ प्रिंट सामग्री केवल एक स्थान पर सीमित होती थी, वहीं अब एक ही संसाधन को अनेक उपयोगकर्ता एक साथ ऑनलाइन उपयोग कर सकते हैं। इससे सूचना का लोकतंत्रीकरण हुआ है और क्षेत्रीय तथा भौगोलिक सीमाएँ समाप्त हो गई हैं।

दूसरा महत्वपूर्ण अवसर यह है कि ग्रंथालय अब केवल भंडारण केंद्र न होकर एक डिजिटल ज्ञान केंद्र में परिवर्तित हो चुके हैं। डिजिटल रिपॉजिटरी, संस्थागत संग्रह, ओपन एक्सेस जर्नल्स, और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म्स ने ग्रंथालयों की उपयोगिता को बढ़ाया है। इससे शिक्षण, शोध और नवाचार के क्षेत्र में नई संभावनाएँ उत्पन्न हुई हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, September 2025
Impact Factor: 7.67

इसके अलावा, ग्रंथालय कर्मियों के लिए भी यह परिवर्तन एक नया अवसर लेकर आया है। ई-संसाधनों के प्रबंधन में संलग्न होकर वे अपनी तकनीकी दक्षता, सूचना प्रबंधन कौशल और डिजिटल सेवाओं के संचालन में विशेषज्ञता प्राप्त कर सकते हैं। यह परिवर्तन उन्हें पारंपरिक ग्रंथपाल की भूमिका से आगे बढ़ाकर 'सूचना प्रबंधक' और 'डिजिटल ज्ञान सहयोगी' की भूमिका प्रदान करता है।

ई-संसाधनों के आगमन ने शैक्षणिक सहयोग और नेटवर्किंग के लिए भी नए द्वार खोले हैं। विभिन्न संस्थानों के बीच संसाधनों का साझा उपयोग, अंतर-ग्रंथालय सहयोग, और ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (OER) की उपलब्धता ने उच्च शिक्षा को अधिक समावेशी और सहयोगात्मक बनाया है।

इस प्रकार, यदि सही रणनीतियों, तकनीकी बुनियादी ढाँचे और कुशल मानव संसाधन के साथ ई-संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन किया जाए, तो यह न केवल सूचना सेवाओं की गुणवत्ता को बेहतर बना सकता है, बल्कि ग्रंथालयों को भविष्य की जरूरतों के अनुरूप पुनर्परिभाषित भी कर सकता है।

ग्रंथालय कर्मियों की भूमिका (Role of Library Personnel)

शैक्षणिक ग्रंथालयों में ई-संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन और उपयोग में ग्रंथालय कर्मियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। ई-संसाधनों के तकनीकी स्वरूप, निरंतर अपडेट होते स्वरूप, और उपयोगकर्ताओं की विविध आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, ग्रंथालय कर्मियों को पारंपरिक ग्रंथालय सेवाओं से आगे बढ़कर नवीन तकनीकी दक्षताओं को अपनाना पड़ता है।

ग्रंथालय कर्मी ई-संसाधनों के चयन, मूल्यांकन, संग्रहण, अनुक्रमण, और प्रसार में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। उन्हें यह सुनिश्चित करना होता है कि लाइसेंस, एक्सेस राइट्स, और सदस्यता संबंधी शर्तें संस्थान के हित में हों। साथ ही, उन्हें डिजिटल डेटाबेस, ई-जर्नल्स, ई-बुक्स, और ओपन एक्सेस संसाधनों का परिचय और प्रशिक्षण छात्रों और शोधार्थियों को देना होता है।

इसके अलावा, ग्रंथालय कर्मियों को सूचना साक्षरता (Information Literacy) कार्यक्रमों के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को ई-संसाधनों के प्रभावी उपयोग हेतु प्रशिक्षित करना आवश्यक हो जाता है। उन्हें

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, September 2025
Impact Factor: 7.67

तकनीकी समस्याओं के समाधान में भी सहायता करनी पड़ती है, जैसे एक्सेस त्रुटियाँ, लॉगिन समस्याएँ, अथवा डेटा रिट्रीवल से संबंधित कठिनाइयाँ।

आज के डिजिटल युग में ग्रंथालय कर्मियों की भूमिका केवल पुस्तक प्रदायक की नहीं, बल्कि सूचना प्रबंधक, डिजिटल संचारक, और शैक्षणिक मार्गदर्शक के रूप में परिवर्तित हो चुकी है। वे शिक्षण और अनुसंधान को सशक्त बनाने में एक सेतु का कार्य करते हैं। इसलिए, उनके लिए निरंतर प्रशिक्षण, नई तकनीकों की समझ, और उपयोगकर्ता के साथ संवाद की कुशलता आवश्यक है।

इस प्रकार, ई-संसाधनों के प्रबंधन में ग्रंथालय कर्मी एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में कार्य करते हैं, जो संस्थान की शैक्षणिक गुणवत्ता और अनुसंधान क्षमता को सुदृढ़ बनाने में सहायक होते हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव (Findings and Suggestions)

डिजिटल युग में शैक्षणिक ग्रंथालयों की भूमिका पारंपरिक सूचना स्रोतों के प्रबंधन से कहीं आगे बढ़ गई है। ई-संसाधनों के आगमन ने ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया को अधिक गतिशील, सुलभ और व्यापक बनाया है। इस शोध अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि शैक्षणिक ग्रंथालयों में ई-संसाधनों का समुचित प्रबंधन आज एक अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यकता है, जिससे न केवल छात्रों और शोधकर्ताओं को गुणवत्तापूर्ण सामग्री प्राप्त होती है, बल्कि शिक्षण और अनुसंधान की गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है।

हालांकि, ई-संसाधनों के प्रभावी उपयोग और प्रबंधन में कई चुनौतियाँ भी देखी गईं जैसे - अपर्याप्त तकनीकी संरचना, सीमित बजट, लाइसेंस और अभिगम संबंधित बाधाएँ, ग्रंथालय कर्मियों का तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव, और उपयोगकर्ताओं में जागरूकता की कमी। इन चुनौतियों के बावजूद, ई-संसाधनों के माध्यम से अपार संभावनाएँ भी उभर कर सामने आईं - जैसे ओपन एक्सेस संसाधनों का उपयोग, कस्टमाइज्ड डिजिटल सेवाएँ, दूरदराज़ क्षेत्रों तक सूचना की पहुँच, और लाइफ-लॉन्ग लर्निंग को बढ़ावा देना।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, September 2025
Impact Factor: 7.67

इस परिप्रेक्ष्य में ग्रंथालय कर्मियों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण बन जाती है। उन्हें न केवल तकनीकी रूप से दक्ष होना चाहिए, बल्कि सूचना साक्षरता, डिजिटल सामग्री का मूल्यांकन, सूचना नैतिकता और उपयोगकर्ताओं को प्रशिक्षित करने जैसे विविध क्षेत्रों में भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

सुझाव (Suggestion):

1. तकनीकी प्रशिक्षण: ग्रंथालय कर्मियों के लिए नियमित ICT एवं डिजिटल संसाधनों से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
2. संवेदनीय अवसंरचना: इंटरनेट कनेक्टिविटी, हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, एवं डेटा प्रबंधन हेतु समुचित अवसंरचना सुनिश्चित की जाए।
3. ई-संसाधनों का प्रचार-प्रसार: उपयोगकर्ताओं को ई-संसाधनों की उपलब्धता और उपयोग के तरीकों की जानकारी हेतु ओरिएंटेशन कार्यक्रम चलाए जाएँ।
4. सहयोगात्मक नेटवर्किंग: विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के ग्रंथालयों के बीच संसाधनों के साझा उपयोग को बढ़ावा दिया जाए।
5. यूजर फ्रेंडली पोर्टल्स: ई-संसाधनों की पहुँच और उपयोग की सरलता के लिए एकीकृत और अनुकूल पोर्टल विकसित किए जाएँ।
6. नीतिगत समर्थन: संस्थागत और राज्यस्तरीय नीतियों में ई-संसाधनों को प्राथमिकता दी जाए और उनके प्रबंधन हेतु बजट में वृद्धि की जाए।

अंततः, यदि ग्रंथालयों में ई-संसाधनों का प्रबंधन दूरदर्शिता, तकनीकी दक्षता और उपयोगकर्ता केंद्रित दृष्टिकोण से किया जाए, तो ये संसाधन उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता और समावेशिता का एक सशक्त माध्यम सिद्ध हो सकते हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, September 2025
Impact Factor: 7.67

ग्रंथसूची (Bibliography)

1. चौधरी, सी.एम. (2018). **डिजिटल ग्रंथालय: सिद्धांत और व्यवहार.** नई दिल्ली: एस.बी. नागिया पब्लिशर्स.
2. वर्मा, आर. (2021). **ई-ग्रंथालय सेवाएँ और सूचना प्रौद्योगिकी.** बनारस: भारतीय पुस्तक भवन.
3. सिंह, एस.पी. (2019). **इलेक्ट्रॉनिक संसाधन प्रबंधन**. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी.
4. Mahanta, P.K. (2019). ICT infrastructure and services in the college libraries of Assam: A study. *Library Philosophy and Practice (e-journal)*, 2891. Retrieved from https://digitalcommons.unl.edu/libphilprac/2891
5. Thanuskodi, S. (Ed.). (2020). **Challenges and Opportunities of Digital Libraries**. IGI Global.
6. Harinarayana, N.S. & Raju, N.V. (2018). E-resources and their Usage in Academic Libraries: A Study. *DESIDOC Journal of Library & Information Technology*, 38(4), 235–241.
7. Dadzie, P.S. (2005). Electronic resources: access and usage at Ashesi University College. *Campus-Wide Information Systems*, 22(5), 290–297.
8. Shukla, A. & Mishra, R. (2022). **Emerging Trends in Academic Library Services**. New Delhi: Ess Ess Publications.
9. Ifijeh, G. (2011). User education programmes in academic libraries: A case study. *Library Philosophy and Practice*.
10. Khan, M.T. & Kumar, A. (2021). **Library and Information Services in Digital Environment**. New Delhi: Crescent Publishing Corporation